# संगीत का इतिहास

- पार्वती की शयन मुद्रा को देखकर शिव जी ने रुद्र वीणा बनाई।
- शिव जी ने अपने मुख से पाँच रागों की उत्पत्ति की
- छठवाँ राग पार्वती के मुख से उत्पन्न हुआ
- शिव जी के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा आकाशोन्मुख से क्रमशः भैरव, हिंडोल, मेघ, दीपक और श्री राग प्रकट हुये एवं पार्वती द्वारा कौशिक राग की उत्पत्ति हुई
- ~~पारसी~~ शिव प्रदोष स्तोत्र दो।
- पारसी लेखक के अनुसार पहाड़ों पर मूसीकार नामक एक पक्षी होता है।
- ~~मिस्र~~ मूसीकार की नाक में सात छिद्र थे जिनसे सात स्वरों की रचना हुई।
- मतंग ने बृहद्देशी की रचना की।
- वीणा की समुद्र मथंन के फलस्वरूप प्राप्त हुआ
- एक स्त्रोत के अनुसार पूर्वकाल में पृथ्वी पर 10 कल्पवृक्ष थे
- तूर्याँग कल्पवृक्ष से चार प्रकार के वाद्य का निर्माण हुआ
- ब्रम्हा ने ~~एक~~ अवनद्ध वाद्य का निर्माण किया - मृदंग
- शिवजी का संबंध डमरू नामक अवनद्ध वाद्य से है
- शहनाई की उत्पत्ति शिवजी के वाद्य शृंग या सींग से हुई
- पुराणों के अनुसार संगीत समस्त विद्याओं का मूलाधार है
- सर्वप्रथम शहनाई का वादन शिवजी के परिणय के शुभ अवसर पर हुआ था।

* नृत्य के ही साधन रूप घुंघरु का आविष्कार हुआ।
* वाण वीणा में सौ तार थे जिसे पलाश की शलाकाओं से आघात करके बजाया जाता था। वह बाद में संतूर बन गई
* इसी ने पाश्चात्य देशों में पियानो फोर्ट का रूप ग्रहण किया।
* 21 तार वाली मत्तकोकिला वीणा के आधार पर स्वर मंडल की रचना हुई
* कुछ विद्वान संगीत का जन्म पक्षियों से मानते हैं जिसमें पं० दामोदर पंडित का मत प्रमुख है।